प्रस्तुतकत्री - अनुपम

(अतिथि प्राध्यापिका)

हिंदी विभाग – आर. डी. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

हिंदी (प्रतिष्ठा), खंड 3, पत्र- 6

अलंकार - अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है – अलम+कार, यहां अलम का अर्थ आभूषण है। अलंकार कविता कामिनी के सौंदर्य को बढ़ाने वाले तत्व होते हैं। आचार्य वामन के अनुसार जो किसी वस्तु को अलंकृत करें वह अलंकार है।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद- अलंकार के मुख्यतः तीन भेद होते हैं-

1. **शब्दालंकार**
2. **अर्थालंकार**
3. **उभयालंकार**

शब्दालंकार- शब्द के दो रूप हैं- ध्वनि और अर्थ। ध्वनि के आधार पर **शब्दालंकार** की सृष्टि होती है। इसके अंतर्गत अनुप्रास, यमक, पुनरुक्ति, विप्सा, वक्रोक्ति, श्लेष आदि।

अर्थालंकार- अर्थ को अलंकृत करने वाले अलंकार को **अर्थालंकार** कहते हैं।

उभयालंकार- जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित रहकर दोनों को चमत्कृत करते हैं वह **उभयालंकार** कहलाते हैं।

यहां कुछ अलंकारों का उल्लेख किया जा रहा है-

उत्प्रेक्षा – उपमेय (प्रस्तुत) में कल्पित उपमान (अप्रस्तुत) की संभावना को **'उत्प्रेक्षा'** कहते हैं। उत्प्रेक्षा का अर्थ होता है किसी वस्तु को संभावित रूप में देखना। इसमें मानों, जानो, इव, जनु, मनु आदि शब्दों द्वारा संभावना पर जोर दिया जाता है।

जैसे –

सखी ! सोहत गोपाल के और गुंजन की माल ।
बाहर लसत मनो पिए दावानल की ज्वाल ।।

यहां उपमेय **'गुंजन की माल'** में उपमान **ज्वाल** की संभावना प्रकट की गई है।

अतिश्योक्ति - जहां किसी का वर्णन इतना बढ़ा चढ़ाकर किया जाए कि सीमा का उल्लंघन हो जाए, वहां **अतिश्योक्ति अलंकार'** होता है **अतिश्योक्ति** का अर्थ होता है उक्ति में अतिशयता का समावेश। इसमें उपमान का वर्णन होता है

उदाहरण –

बांधा था विधु को किसने, इन काली जंजीरों से ।
मणिवाले फनियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरो से ।।

यहां **मोतियों** से भरी हुई प्रिया की मांग का कवि ने वर्णन किया है। विधु या चंद्र से मुख का, काली जंजीरों से केश और मणिवाले फणियों से मोती भरी मांग का बोध होता है।

असंगति – कारण और कार्य में संगति ना होने पर असंगति अलंकार होता है।

उदाहरण –

“हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै।“

घाव तो लक्ष्मण के **हृदय** में है पर **पीड़ा** राम को है अतः यहां असंगति अलंकार है।

विरोधाभास – जहां विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहां विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण –

बैन सुन्या जबतें मधुर, तबतें सुनत न बैन।

यहां **बैन सुन्या** और **सुनत न बैन** में विरोध दिखाई पड़ता है लेकिन दोनों में वास्तविक विरोध नहीं है। यह विरोध तो प्रेम की तनम्यता का सूचक है।

समासोक्ति अलंकार –

जहां प्रस्तुत मे अप्रस्तुत का बोध होता है वहां समासोक्ति अलंकार होता है। प्रस्तुत के वर्णन में समान अर्थ सूचक विशेषणों के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाए वहां समासोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण –

‘ कुमुदिनिहु प्रमुदित भई साँझ कलानिधि जोय '

विशेषोक्ति - काव्य में जहां कारण के होते हुए भी कार्य का ना होना पाया जाए, वहां विशेषोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण -

दो – दो मेघ बरसते हैं,

पर मैं प्यासी की प्यासी हूं ।।

यहां पर **मेघ** बरसने पर **प्यासी** की प्यासी रहने की बात की गई है।